P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-11* (Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

गंधार कालीन बौद्ध मूर्तिशिल्प

सारांश

मूर्तिकला मानव चेतना का चैतन्य रूप प्रदर्शित करती है। भारतीय उप–महाद्वीप में मूर्तिशिल्प का विकास सैन्धव सभ्यता से ही दिखाई देता है। इसका दक्ष रूप इसमें धार्मिक प्रतीकों के समावेश के बाद उभरा। मूर्तिशिल्प परस्परा में बौद्ध धर्म ही पहला संस्थागत धर्म था जिसने इस तरह के देवी आदर्शों को लोक आस्था और विश्वास को मानव रूपी कल्याणी से जोडा। जिसका प्रमाण हम भारतीय मूर्तिशिल्पों के रूप में देखते है। यह मूर्ति शिल्प भारत की अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर है जिसे आज अनेक शैलियों के रूप में पहचान मिली है। जिसका एक काल खण्ड भारतीय मूर्तिशिल्प में गांधार मूर्तिशिल्प शैली भी रहा है।

मुख्य शब्द : गांधार, मूर्तिशिल्प, बौद्ध हस्तमुद्राएं, आभूषण।

रुबी राठौर
शोधार्थिनी,
चित्रकला विभाग,
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट,
दयालबाग, आगरा

प्रस्तावना

गांधार शिल्प की खोज सर्वप्रथम **डॉ. लिथर** ने की व इसका स्पष्ट वृहद् रूप **कर्टिन्स** ने प्रस्तुत किया। इस शैली की अब तक लगभग 50,000 मूर्तियाँ प्राप्त हो चुकी है, जो कि काले स्लेटी पत्थर की बनी हुई है। ये मूर्तियॉ किस काल की है यह निश्चित रूप से नही कहा जा सकता है, क्योंकि इन पर कोई लेख प्राप्त नही हुआ है, जिसके आधार पर इनके समय को निर्णय किया जा सके। किन्तु विद्वानों ने इस शिल्प कला का काल 50.ई.पू. से 300 ई. पू. तक निर्धारित किया है क्योंकि इससे पहले अथवा बाद में इस शैली की कोई भी मूर्ति प्राप्त नही होती। यह भी आश्चर्य की बात है कि इससे पहले की मूर्तिकला में बुद्ध की मूर्ति का अभाव था जबकि इस शैली में बुद्ध मूर्ति ही सर्वत्र दिखाई देती है।

इस गांधार शैली को मुख्य रूप से सम्मिलित शैली कहा जाता है। जिसमें विदेशी शैली यूनान–ग्रीक–रोमन शैलियों का विशेष प्रभाव दिखाई देता है। इसलिए विद्वानों ने इसे ग्रीक–बुद्धिस्ट, इण्डो–ग्रीकों अथवा इण्डो–हेलेनिस्टक नाम से पुकारा है। इस शैली का व्यापक क्षेत्र पेशावर सिन्धु काबुल घाटी व पंजाब माना गया है।

गांधार का क्षेत्र राजनीतिक उथल–पुथल से व्याप्त था यहाँ निरन्तर संघर्ष राजनीतिक प्रभुसन्ताओं ने बल दिया। हरवामशी, यूनानी, शक, पहलव व अन्तिम शासक वर्ग कुषाण सभी ने यहाँ राज्य किया। इसलिए यहाँ कि मूर्तिशिल्पों में मिश्रित शैली के तत्व दिखाई देते है। यही प्रभुसत्ता इन मूर्तिशिल्प पर हावी रही। बल एवं पौरूष की प्रतीक मूछें तथा बलिष्ट शरीर लगभग मूर्ति की सामान्य विशेषता रही। यूनानी देवलोक का प्रभाव यहाँ की मूर्तियों में विशेष रूप से पड़ा, जिसमें मूर्ति का ब्राह्म आवरण अत्यन्त सपाट लेकिन प्रभुसत्ता सचूक बनाया।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधकार्य विषय पत्र का उद्देश्य गांधार कालीन मूर्तिशिल्पों के सौन्दर्यात्मक तथा धार्मिक पक्षों का विश्लेषण करते हुए उनकी शैलीगत विशेषताओं को स्पष्ट करना।

साहित्यावलोकन

शोध विषय से सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन विषय के सम्बन्ध में वास्तविक तथ्य व जानकारी एकत्र करने में सहायता प्रदान करता है। अतः अपने शोध विषय 'गांधार कालीन मूर्तिशिल्प का अध्ययन(सन्दर्भ–राजकीय संग्रहालय, चण्डीगढ़)' के सन्दर्भ में मैंने अनेक पुस्तकों का गहन अनुशीलन किया, जिनमें कि **'मीनाक्षी कासलीवाल'**की पुस्तक **'भारतीय मूर्तिशिल्प एवं स्थापत्य कला'** से मुझे प्राचीन भारतीय मूर्तिकला के सन्दर्भ में ज्ञान प्राप्त हुआ।**'वासुदेव उपाध्याय'** द्वारा लिखित **''प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान''** नामक

पुस्तक से गांधार शैली की उत्पत्ति तथा उसकी भौगोलिक, सांस्कृतिकएवं धार्मिक स्थिति का परिचय मिला। 'John Marshall' की पुस्तक ''The Buddhist art of Gandhara" से गांधार कालीन मूर्तिशिल्पों की कलात्मक विशेषता की पूर्ण जानकारी प्राप्त हुई।'Shantilal Nagar' द्वारा लिखित 'Buddha inGandhara (and other Buddhist Sites)' नामक पुस्तक से मुझे गांधार शैली के अनेक पक्षों का ज्ञान प्राप्त हुआ। 'पद्म श्री प्रभाशंकर आ0 सोमपुरा'की पुस्तक ''भारतीय शिल्पसंहिता'' से मूर्तिशिल्पों में प्रयुक्त लक्षण व तालमान के महत्व को जाना।इन पुस्तकों और अन्य सभी स्त्रोतों से प्राप्त जानकारी के आधार पर मैं गांधार मूर्तिश्ल्पि के ऐतिहासिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक व धार्मिक पक्षों का अनुशीलन करने का प्रयास करूँगी। साथ ही इन मूर्तिशिल्पों का रूपात्मक एवं शिल्प शास्त्रीय विश्लेषण तथा मथुरा मूर्तिशिल्प से तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करूँगी।

गांधार कला एक प्रसिद्ध प्राचीन भारतीय कला रही है। इस कला का उल्लेख वैदिक तथा बाद के संस्कृत साहित्य में मिलता है। सामान्यतः गांधार शैली की मूर्तिकला कुषाण काल के अन्तर्गत विकसित हुई, क्योंकि यह प्रदेश प्रारम्भ से ही बौद्ध धर्म से प्रभावित रहा। तथागत् अनेक विदेशी संस्कृतियों का केन्द्र भी रहा था जिसमें यवन, पहलव, शक, यूनानी–रोमन और कुषाण ने मुख्य रूप से यहाँ राज्य किया। कुषाण ने अफगानिस्तान, कपिश तथा पश्चिम पूर्वीय गांधार व पूर्वी ईरान तक अपने साम्राज्य का विस्तार किया। यह कुषाण बौद्ध धर्म का अनुयायी था। इसका पुत्र **'विमकफ्स'** जिसने अपने राज्य को आन्ध्र की सीमाओं तक विकसित कर लिया, इसने मथुरा को भी जीत लिया, लेकिन यह शैव मत का अनुयायी था। इसीलिये इसी का उत्तराधिकारी सुप्रसिद्ध महाराज **'कनिष्क'** हुआ जो कुषाण वंश का सबसे महान सम्राट कहलाया। इन्हीं के समय में गांधार, बौद्ध मूर्ति कला का विकास हुआ है। कनिष्क ने लगभग 20 वर्ष तक यहाँ राज्य किया। कनिष्क महायान बौद्ध सम्प्रदाय का अनुयायी था। इस समय तक ब्राह्मण धर्म में मूर्ति पूजा का प्रचलन था, इसी ब्राह्मण धर्म से प्रभावित होकर बौद्ध सम्प्रदाय में भी मूर्ति पूजा का विकास हुआ। यह एक समानान्तर संयोग ही था कि इस दौर में भारतीय धर्म परम्परा में देव के अवतारी रूपों की कल्पना धार्मिक साहित्य में शुरु हो गई। बौद्ध धर्म में भी बुद्ध को तथागत् से महात्मा घोषित कर दिया जिसके कारण बुद्ध अलौकिक, बोधिसत्वों तथा उनके दूसरे अवतारों की मूर्तियाँ गान्धार शैली में बनाई गयी।

इन्हीं परम्परा एवं धर्म को लेकर यह मूर्तियाँ गान्धार शैलियों के नाम से पुकारी गई किन्तु विदेशी विद्वानों ने इसे ग्रीक–बुद्धिस्ट, इण्डो–ग्रीको अथवा इण्डो–हेलेनिस्टिक काल के नाम से भी पुकारी गयी।

इस शैली का क्षेत्र जलालाबाद, हड्डा, बामियान, स्वेत घाटी, पेशावर, सिन्ध, पंजाब आदि रहे हैं। इस कला में पहली बार बुद्ध की सुन्दर मूर्तियों का निर्माण किया गया है। इस शैली का निर्माण काल पहली शती ई0 से चौथी शती ई0 के मध्य माना गया है।

गांधार की मूर्तिकला विषय की दृष्टि से बौद्ध होते हुये भी प्रजातीय दृष्टि से तत्कालीन परिवेश में पल्लवित हुई है, यहाँ की मूर्तियों में बुद्ध व बौद्धिसत्व लक्षण भारतीय होते हुये भी वेषभूषा और प्रस्तुति में यूनान और रोमन का प्रभाव रहा है। यहाँ विदेशी कलाकार भारतीय लक्षणों से परिचित होते हुये भी वह उनके मर्म को समझने में असमर्थ रहा, इसलिये दूसरी, तीसरी शती ई0 में बनी बुद्ध मूर्तियों में बलिष्ठ युवा पुरुष, ध्यान करते हुये उनके नेत्र अध खुले हुये उनके मुख पर मूंछ, केशों का उष्णीय बनाते समय गांधार परम्परा के अनुसार केशों को तरांगत बनाया गया। साथ ही बुद्ध को मोटी संघाटी शौंल ओढ़े हुये तथा इसी प्रकार उष्णीय, उर्णा, योगासन, प्रभावलि, बोधिवृक्ष, महापुरुष लक्षण और विभिन्न हस्त मुद्राओं को लेकर कलाकार ने मूर्तियाँ निरूपति की। बुद्ध के जीवन की प्रमुख घटनाओं तथा बुद्ध के जन्मांतरों की कथाओं एवं जातक कथाओं, ऐतिहासिक विषयों का अंकन यहाँ के शिल्पकारों ने बड़ी कुशलतापूर्वक गांधार बौद्ध मूर्तियों में उकेरा गया हैं।

गांधार शैली में जातक कथाऐं विशेषकर छंदत जातक, वैशान्तर जातक, श्याम जातक, दीपांकर जातक आदि मुख्य रहे, गांधार शैली में बोधिसत्व प्रतिमाओं में अवलोकेतेश्वर, मंजुश्री और मैत्रेय को अंकित किया है। गांधार शैली का शिल्प माध्यम काला स्लेटी पत्थर रहा, जिसे शिल्पकार ने बुद्ध तथा बोधिसत्व प्रतिमाओं में आकार प्रदान किया। इस शैली में मानव आकार पाँच ताल का माना गया है और इसी के आधार पर बुद्ध के अंग–अंग को नियमबद्धता से शिल्पांकित किया गया है। इनकी मूर्तियों में भगवान बुद्ध यूनानी देवता के समान दिखाये गये हैं। इस शैली में उच्च कोटि की नक्काशी का प्रयोग करते हुये इन गांधार कालीन बुद्ध मूर्तियों में प्रेम, करुणा, वात्सल्य आदि विभिन्न भावनाओं एवं अलंकारिकता का सुन्दर सम्मिश्रण प्रस्तुत किया गया है। जो आज भी ये मूर्तिशिल्प अपने कलात्मक तत्वों के आधार पर विश्वविख्यात हैं।

गांधार कालीन बौद्ध मूर्तिया

चित्र संख्या– 1 शीर्षक–बुद्ध स्थानक प्रतिमा, माध्यम–स्लेटी काला, द्वितीय शताब्दी

इस बुद्ध मूर्तिशिल्प में बुद्ध को योगी के समान प्रस्तुत किया गया है तथा शिल्पकार ने बुद्ध के अंग–प्रत्यंग को पाँच ताल में नियम बद्धता के साथ विभाजित किया गया है। इस मूर्तिशिल्प में बुद्ध को स्थानक प्रतिमा के रूप में व्यकत करते हुये उनके मुख

पर मूछें तथा सौम्य भाव प्रदर्शित किया है। साथ ही बालों का जूड़ा, कन्धों से पैरों तक लम्बा वस्त्र जिसमें अत्यधिक चुनटे बनायी गयी है। इस बुद्ध मूर्तिशिल्प का रूपान्तरण यूनानी व ग्रीकों ढ़ग से व्यक्त करते हुये विषय पूर्ण रूप से भारतीय परम्परा पर आधारित बनाया गया है। यह गांधार शैली का महत्वपूर्ण मूर्तिशिल्प है।

(बुद्ध स्थानक)

चित्र संख्या – 2 शीर्षक –राजकुमार के रुप में बुद्ध, माध्यम–स्लेटी काला पत्थर, समय– द्वितीय शताब्दी, संग्रहीत–राजकीय संग्रहालय, चण्डीगढ़ :– यहाँ मूर्तिशिल्प में बुद्ध को राजकुमारी के रूप में प्रदर्शित किया गया है जिसमें बुद्ध का शरीर मांसल शरीर, मांस पेशिया उभरी हुई तथा पारदर्शी लम्बा वस्त्र नीचे तक सलवटों से युक्त, सिर पर पगडी जिसमें रत्न लटके हुए एवं गले में मालायें, बालों को कंधों तक लहराते हुये रेखाओं के माध्यम से इस प्रतिमा में दिखाया गया है। जिसे बोधिसत्व पुरूष यौद्धा के रूप में प्रदर्शित किया गया है।

(राजकुमार के रूप में बुद्ध)

चित्र संख्या – 3 शीर्षक –तपस्वी गौतम बुद्ध, माध्यम–स्लेटी काला पत्थर , समय– छठी शताब्दी का आरम्भ

पेशावर संग्रहालय में प्राप्त इस शिल्प में तपस्वी गौतम बुद्ध को प्रदर्शित किया गया है जिसमें उनका शरीर हड्डियों के ढांचे के समान दिखाया गया। उनकी आँखे गढ्ढे में धसी हुई, शरीर व चेहरे पर सिकुडन प्रदर्शित की गई है यह मूर्तिशिल्प किसी नर कंकाल के समान दिखाया गया है।

(तपस्वी गौतम बुद्ध)

चित्र संख्या – 4 शीर्षक– बुद्ध पद्मासन मुद्रा में, माध्यम–स्लेटी काला पत्थर, समय– द्वितीय शताब्दी , संग्रहीत– राजकीय संग्रहालय, लखनऊ

यह मूर्ति शिल्प में बुद्ध को आसन में बैठे हो बज्र मुद्रा में (गर्जन मुद्रा) में प्रदर्शित किया है। यह ज्ञान की मुद्रा है जिसे दाहिने हाथ की मुट्ठी बना कर तर्जनी को ऊपर की ओर प्रसारित करके इसे किया जाता है और तर्जनी को ढंकते हुए बाए हाथ से मुट्ठी बनाकर भी इसे प्रदर्शित किया जाता है। यहाँ मूर्तिशिल्प में वस्त्रों की सलवटों को पारदर्शी रूप से तथा हाथ–पैरों की बनावट में भावपूर्ण लोच प्रदर्शित क गई है। आँखों को कटाक्ष तथा नेत्र अध खुले बनाने गये है। यह मूर्तिशिल्प की विशेषता पूर्णतय भारतीय ही रही है। बुद्ध के पीछे सपाट आभामण्डल भी प्रदर्शित किया है जो दिव्य ज्ञान को प्रतीक माना गया है।

(बुद्ध पद्मासन मुद्रा)

चित्र संख्या– 5 शीर्षक– बुद्ध की पूजा करते मानव समूह, माध्यम–काला स्लेटी पत्थर, समय– तीसरी शताब्दी

इस मूर्ति शिल्प में बुद्ध को एक योगी के रूप में बैठे हुए ध्यान मुद्रा में निर्मित किया गया है, जो पूर्ण रूप से भारतीय परम्परा पर आधारित है। इस मूर्ति शिल्प में संयासी के वस्त्र पहने हुए व मस्तक इस तरह से दिखाया गया है जैसे उसमें आध्यात्मिक शक्ति बिखर रही हो। इस मूर्तिशिल्प में अध्यात्म को ध्यान में रखते हुये मानव समूह को पूजा करते हुये दिखाया गया है। जिसमें की वह सब सुन रहे है, सब देख रहे है और सब कुछ समझा रहे है।

(बुद्ध की पूजा करते मानव समूह)

चित्र संख्या – 6 व 7, शीर्षक– सिद्धार्थ जीवन सम्बन्धी मूर्तिशिल्प, माध्यम काला पत्थर, समय– तीसरी शताब्दी

इस मूर्ति शिल्प में माया देवी शाल वृक्ष की डाल पकडे हुए खडी है। समीप ही प्रजावती देवी भी खड़ी है देवराज वस्त्र पकडे हुए शिशु सिद्धार्थ को अपने हाथों में ले रहे है। उनके पीछे ब्रह्मा जी खडे है। साथ ही बुद्ध जन्म के एक अन्य दृश्य में शिशु सिद्धार्थ के प्रथम स्थान का दृश्य अंकित है। वे चौकी पर खडे तथा इन्द्र जल पात्र लेकर उनका स्नान करा रहे है। ऐसे अनेक दृश्य गांधार शैली में व्याप्त है जो यूनान–ग्रीक से प्रभावित होते हुऐ पूर्णता भारतीय विषयों पर आधारित रहे है।

गांधार प्रदेश में जब भग्न स्तपों की खुदाई की गई तब वहाँ से इन मूर्तिशिल्पों का विशाल भण्डार प्राप्त हुआ जो कि पेशावर, लाहौर, चण्डीगढ़, कलकत्ता, लखनऊ आदि संग्रहालयों में आज भी सुरक्षित है। गांधार की शैली महायान के मूर्ति विधान की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। विषयों का बाहुल्य इसकी विशेषता है। इसी कारण हम देखते है कि शायद ही ऐसा कोई प्रसंग शेष रहा होगा जिसे गांधार शिल्पियों ने उकेरा न हो। बुद्ध के भूमि पर अपतरित होने से लेकर परिनिर्वाण तक के सारे प्रसंग इस शिल्प में निर्मित किये गये है किन्तु गांधार मूर्तिशिल्पों की संख्या इतनी अधिक विशाल है कि उनका पृथक रूप से अध्ययन कर पाना सम्भव नहीं।

निष्कर्ष

अतः अन्त में हम कह सकते है कि गांधार शैली समिश्रित परम्पराओं का उच्चतम् उदाहरण है जिसमें ग्रीक, यूनान व रोमन की न यथार्थता न ही भारतीय पूर्ण रूप से गढ़नशीलता दिखाई गई है। इस शैली का महत्वपूर्ण माध्यम विशेष रूप से स्लेटी काला पत्थर तथा कहीं–कहीं मसाले का भी प्रयोग कर शिल्पकार ने बडी कुशलता पूर्वक दर्शाया है। इस शैली में प्रत्येक बुद्ध प्रतिमा को मुख्य स्थान देकर उनके दिव्य दैविय आदर्शो को मानव आस्था से जोडा है। यह गांधार बौद्ध मूर्तिशिल्प अतीत की धरोहर के रूप में आज भी हमारे मध्य विध्यमान है। तत्कालीन गौरव के परिचायक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *कुमारी मालविका, विधावती, बौद्ध कलाकृतियाँ, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी, 1957*
2. *जोशी,पुरुषोत्तम नील, प्राचीन भारतीय मूर्तिविज्ञान, विहार–राष्ट्र भाषा–परिषद, पटना, 2017*
3. *चन्द्र पाण्डेय, गोविन्द, बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, हिन्दी समिति सूचना विभाग उ0प्र0 लखनऊ, 1963*
4. *Agrwala,V.N.'Buddha And Bodhisattva' In Images In Mathura Museum, Journal Of Uttar Prdesh Historical Sociely,1948*
5. *www.gktoday.in/gandhara-school-of-art*
6. *https://en.wikipedia.org/wiki/Gandhara*